फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

30 हजार

मजदूर समाचार के नवम्बर 2019 अंक की 30 हजार प्रतियाँ छपी। व्हाट्सएप और ईमेल पर भी प्रसारित हुआ।

छपी हुई या पी डी एफ रूप में आप मजदूर समाचार लेना-आगे बढाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें। फोन/व्हाट्सएप : 9643246782

नई सीरीज नम्बर '59; जनवरी 4242

बेठिकाने अक्षर

वो प्रश्न बहुत करती हैं। हर विलाप, हर क्रोध , हर अन्याय पर " क्यों ?" लगा देती हैं।

यह किस सन्दर्भ में बात उभरी ?

ये साथी अपनी पत्नी की बात कर रहे हैं। थोड़ा-सा विस्तार से बोलो साथी। क्या बोल रहे थे ?

मैं यह कह रहा था कि बारह घण्टे ड्युटी करने के बाद घर पहुँच कर ध्यान केन्द्रित कर पढ नहीं पाता। परन्तू उन्हें पढने का बहुत शौक है और ड्युटी के बाद वो पढने के लिये समय निकाल लेती हैं।

दुनिया की खबर, चिन्तन-मनन कमरे में हो जाता है।

बातचीत का माहौल बहुत अच्छा बन जाता है। इसलिये मैं पढने की सामग्री जरूर लाता हूँ। कुछ ही दिन पहले वो पूछ रही थी कि पन्द्रह दिन फैक्ट्री में रह के निकले क्यों ? और निकले भी तो चारों तरफ फैले क्यों नहीं ?

यह तो बहुत ठीक सवाल है। और इसको मैं हर दिन बातचीत में रखता हूँ। दो बातें हैं। पन्द्रह दिन अन्दर बैठ कर अपनी ताकत जो हम सब ने महसूस की। मैनेजमेन्ट की घबराहट देखी। उस ताकत को कैसे अपने बीच में ताजा रखें और दूसरों को किस भाषा में बतायें।

यही कुछ वो बोल रही थी , बाकी सब का बनता है कि कैसे फैलायें उसको सोचें।

बाकी सब का यह बनता है यह सच्ची बात है। यह फैक्ट्री-विशेष की घटना सोच कर छोड़ नहीं देना है। इतनी गति से मिल कर फैक्ट्री में बैठ जाने की गतिविधियाँ दस साल से बढ रही हैं और एक प्रभावशाली चलन बन गई हैं। ऐसे में —

ऐसे में अपना फैक्ट्री-स्थल कह कर छोटा बनाना आत्मघाती है। हो तो यह रहा है कि एक का कार्यस्थल दूसरे के कार्यस्थल को संकेत दे रहा है।

वो मुझे कल बोल रही थी कि आप संकेत नहीं पकड़ते हो। कौन क्या बोल रहा है और क्या कर रहा है उसी में घूम जाते हो।

हाँ। उसने क्या बोला। उसने क्या आश्वासन दिया। उसने भाषण में क्या कहा। इन में ही थक जाते हैं, थका दिये जाते हैं।

इसलिये शायद स्थितियों को पढने की हमारी क्षमता धुँधली पड़ जाती है। करने की क्षमता तो कई बार ओझल ही हो जाती है।

विलाप में मत जा। सवाल पर रह। आज ही लन्च में एक साथी पी एफ में से पैसे निकालने में लगे समय की चर्चा कर रहे थे। उनके नाम में एक अक्षर बेठिकाने था। हो गया। चक्कर पे चक्कर।

और तू सोच वह स्थिति जहाँ अरबों लोग अपने और अपने माता-पिता के नाम ठीक करवा रहे हैं। बेठिकाने अक्षर ठिकाना ढूँढते हुये।

दोस्त, हमारे ठिकाने को तो चार-छह महीने में बेठिकाने कर देते हैं।

मतलब ?

(खूब हँसते हुये) कार्ड नम्बर बदल देते हैं। शायद कम्पनी हमारी ग्रेच्युटी से तैर जायेगी।

अगर व्यक्ति-विशेष नहीं है तो इस में सब का सवाल क्या है ?

थोड़ा खोल कर बोल। मैं दर्शक हो कर नहीं पूछ रहा यह बात। मैच का स्कोर नहीं पूछ रहा। वहाँ क्या हो रहा है यह नहीं पूछ रहा।

कहीं पर हम ढूँढते हैं सोचने के तरीके। तत्काल की अपनी गतिविधि को प्रभावशाली बनाने और विस्तार देने के लिये।

कहीं पर हम अपनी और दूसरों की गतिविधियों से अपने सोचने को तीखा करते हैं।

वो पूछती कि आप स्वयं को दूसरों की गतिविधियों से जुड़े कैसे पाते हो ? और अपनी गतिविधियों में दूसरों की क्या छवि पाते हैं ?

यह सवाल मेरे साथ रहेगा।

शायद हम सब के साथ रहेगा। शायद रहता है। अस्थिर है। उतार-चढाव लिये है। जब हम अन्दर थे तब लाखों महसूस हो रहे थे। बाहर आने के बाद सिकुड़न-सी महसूस होती है।

यह हम सब को भी महसूस होती है। मुझे आज को देख के लगता है कि जब अन्दर थे तब सब का पड़ोस आ कर फैक्ट्री गेट पर बैठ जाता तो पूरे औद्योगिक क्षेत्र की रंगत बदल जाती।

रंगत बदलनी होती है। रंगत बदलने के साथ दुनिया की सोच और व्यवहार बदल जाते हैं।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

संकेत

जे बी एम ऑटो (133 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री चार-पाँच महीने से शुक्रवार और शनिवार को बन्द रहती है। परमानेन्ट मजदूरों की छुट्टियाँ कम्पनी काट रही है। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 800 वरकरों को वर्ष में मात्र तीन छुट्टी — 26 जनवरी, 15 अगस्त, 2 अक्टूबर। सप्ताह में दो दिन के पैसे तनखा से काट रहे हैं।

ट्रैन्डसैटर इन्टरनेशनल (11 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में आजकल हर रोज नाइट लगती है। प्रोडक्शन में महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम। फिनिशिंग में महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम। वरकर दारू पी कर आते हैं। आपस में लड़ाई। कैंची मार देते हैं। गेट पर नहीं रोकते, काम करवाना है। सुपरवाइजर दारू छिपाने के लिये परफ्युम लगा कर आते हैं। मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्टाफ को ओवर टाइम के पैसे नहीं — रात 10 बजे तक भोजन के 27 रुपये, 1 बजे तक के लिये 50 रुपये, अगली सुबह 4 बजे तक ड्युटी पर भोजन के लिये 70 रुपये। इस समय फैक्ट्री में 1500 वरकर जिनमें से 150-200 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। चैकिंग आने पर सब मजदूरों को फैक्ट्री के पिछले गेट से निकाल देते हैं। गर्मियों में काम डाउन पर एक हजार वरकरों को निकाल देते हैं। बायर : वॉलमार्ट, जारा, सुपर ड्राई। ट्रैन्डसैटर कम्पनी की गुड़गाँव में खान्डसा और उद्योग विहार में भी फैक्ट्रियाँ हैं।

सेमटेक डिजाइन (ए-36 हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में 2019 में बोनस नहीं दिया। दो थाली, दो गिलास, मिठाई मजदूरों ने नहीं लिये। दिवाली बाद फैक्ट्री में वरकरों ने काम आरम्भ नहीं किया। चार दिन मशीनें बन्द कर मजदूर फैक्ट्री में बैठे। बोनस दिलवायेंगे कह कर यूनियन लीडरों ने 250 वरकरों से 220-220 रुपये लिये। श्रम विभाग में तारीखें पड़ रही हैं।

फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। कोयले वाले बॉयलर। प्रदूषण वालों की सख्ती के कारण नवम्बर में फैक्ट्री 11 दिन बन्द। बन्द दिनों के पैसे नहीं दिये। यूनियन लीडरों ने हर मजदूर से 40-40 रुपये ले कर इन पैसों के लिये श्रम विभाग के केस किया है।

इधर 1 दिसम्बर से फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट। दो साल से काम कर रहे 50 वरकर निकाल दिये हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से और 12 घण्टे में कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती। फैक्ट्री में पीने का पानी खराब।

टेलर : उद्योग विहार गुड़गाँव में 4 साल गारमेन्ट फैक्ट्रियों में काम किया। फिर तीन साल गाँव में खेती की। ड्राइवर भी रहा। पेन्टर का काम भी किया। अब उद्योग विहार में काम ढूँढ रहा हूँ। जितना काम बढाओ उतनी ही टेन्शन।

ओरियन्ट इलेक्ट्रिक (11 सैक्टर-6, फरीदाबाद) पँखा फैक्ट्री में छुट्टी जाने पर कार्ड नम्बर बदल देते हैं। पन्द्रह-बीस वर्ष से ओरियन्ट में काम कर रहे मजदूरों को कार्ड नम्बर बदलते रहने के कारण ग्रेच्युटी नहीं।

ओ सी स्वेटर (32-33 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में दिन की शिफ्ट में 1500 और रात की शिफ्ट में 500 मजदूर। मैनेजमेन्ट : ''कोई पूछे तो कहना कि ओवर टाइम बहुत कम, एक-दो घण्टे, पैसे तनखा के साथ।'' जबकि प्रोडक्शन में महीने में 150-200 घण्टे और फिनिशिंग तथा पैकिंग में 200-225 घण्टे ओवर टाइम। कम्पनी रोल पर 500 से कम को ओवर टाइम दुगुनी दर से। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे वरकरों को ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से। तनखा 10 तारीख को बैंक खातों में। फिर 18 से 20 तारीख के दौरान रविवार के तथा ओवर टाइम के पैसे। भर्ती करना और निकालना वर्ष के 365 दिन।

अर्जुन ऑटो (235 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में जो 30 परमानेन्ट मजदूर थे उन्हें नवम्बर में दस दिन में निकाल दिया। कम्पनी रोल पर जो 50 और थे उन्हें भी निकाल दिया। अब ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 250 वरकर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में काम करते हैं। पहले 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी। इस महीने-उस महीने दे देंगे करते जुलाई 2019 से देय महँगाई भत्ता नहीं दिया है, दिवाली पर देय बोनस नहीं दिया है।

शिवालिक प्रिन्ट्स (21-22 सैक्टर-6, फरीदाबाद) में सिलाई और फिनिशिंग में 1600 मजदूर। ढाई-तीन सौ वरकर कम्पनी रोल पर और बाकी ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। नवम्बर में काम डाउन था तब एक रविवार ही काम। कभी-कभार शनिवार तथा रविवार उत्पादन बन्द। छुट्टी में एडजस्ट अथवा ओवर टाइम में से पैसे काट लेते हैं। कम्पनी झूठ बोलने को कहती है : ''कोई पूछे तो कहना कि शनिवार तथा रविवार को फैक्ट्री बन्द रहती है। इन दो दिनों में चलवाते हैं तो पैसे डबल देते हैं। बाकी दिनों में 8 घण्टे की ड्युटी।''

पी एन जी इन्टरप्राइजेज (9 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) लैदर फैक्ट्री में 600 मजदूर सुबह 10 बजे से रात 7-12-2 बजे, अगली सुबह 5 बजे तक काम करते हैं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम। रविवार को ड्युटी अनिवार्य। रविवार को 8 घण्टे के 200 रुपये और नाइट के 100 रुपये। सण्डे को नाइट करने से इनकार करने पर एक सप्ताह के पैसे काट लेते हैं। ओवर टाइम में बहुत गड़बड़ी — कितने ही घण्टे हों, रात के 180 रुपये ही। सब कारीगर पीस रेट पर। बोनस नहीं। कैन्टीन में 20 रुपये में भोजन ठीक।

ऋचा (871 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 टेलरों को चार-पाँच महीने से तनखा देरी से। एच आर वालों को मजदूर कहते हैं तो वो कहते हैं कि ठेकेदार कम्पनियों को पैसे दे दिये हैं। वरकरों द्वारा यह कहने पर कि जिम्मेदारी ऋचा कम्पनी की है, साहब लोग चुप्पी साध लेते हैं।

ग्रे ओरेन्ज (191 ए सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) वैश्विक कम्पनी की फैक्ट्री में दो शिफ्टों में 150 मजदूर रोबोटिक वेयरहाउस ऑटोमेशन सिस्टम्स असेम्बल करते हैं। सब वरकर एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं। काम करते एक-दो वर्ष हो जाते हैं तब गलती निकालने लगते हैं। फिर निकाल देते हैं। स्टाफ के 15 लोग ही परमानेन्ट हैं। मजदूरों को परमानेन्ट नहीं करते।

हुबरसुन्नर (125 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में नेटवर्क टावरों में लगते केबल को कनेक्टर, पिन आदि से जोड़ते हैं। फैक्ट्री में 800 वरकर थे। अगस्त से लगातार निकालते रहे हैं। दिसम्बर-अन्त में 250 मजदूर रह गये। जून से दिसम्बर तक काम डाउन रहता रहा है। और जनवरी से भर्ती। हर वर्ष कभी 15, कभी 20 दिन के ब्रेक देते थे परन्तु इस बार अनलिमिटेड ब्रेक है। चार-पाँच वर्ष से काम कर रहों को भी निकाला है। पत्नी फैक्ट्री में काम करती हैं इसलिये रुका हूँ। अन्यथा गाँव जाता।

मन्थन

तीस वर्ष से गारमेन्ट फैक्ट्रियों में काम कर रहे सिलाई कारीगर : ''हमें कम्पनी से शिकायत नहीं है। हमें अपने से शिकायत है। कोई बिहार के, कोई यूपी के, कोई दिल्ली-हरियाणा के बनते हैं। एक एरिया के दूसरे एरिया वालों को पसन्द नहीं करते। हिन्दू-मुस्लिम बन कर भी एक-दूसरे से कटते हैं। जबकि कोई यूपी-बिहार नहीं है। कोई बीजेपी-काँग्रेस नहीं है। मजदूर तो मजदूर हैं। हमारे लिये तो मिल कर करना ही बनता है। हम में मेल, और सिर्फ मेल से ही बात बनेगी।''

कुछ इमेल पते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा < cm@hry.nic.in>
श्रम आयुक्त, हरियाणा < labour@hry.nic.in>
मुख्य मन्त्री, दिल्ली < cmdelhi@nic.in>
श्रम विभाग दिल्ली < labjlc2.delhi@nic.in >
मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश ईमेल < cmup@nic.in >
श्रम आयुक्त, उत्तर प्रदेश इमेल <labourcom@nic.in>
ई एस आई महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

प्रश्न–सवाल–क्वश्चन

✶ **सवाल एक नोएडा से :** ''नौ घण्टे काफी अधिक हैं। किसी कार्यालय में काम करने के 9 घण्टे का मतलब है कि कर्मचारियों को पारगमन समय, तैयार होने का समय आदि पर विचार करने के लिये पेशेवर जीवन की ओर कम से कम 12 घण्टे लगाना होगा। पेशेवर जीवन के लिये दिन का आधा और अच्छी सेहत बनाये रखने के लिये 7/8 घण्टे की नींद अपने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन को बनाये रखने के लिये अपने निपटान में केवल 4 घण्टे छोड़ेंगे जो काफी अपर्याप्त हैं। कार्यालय में 9 घण्टे का मतलब यह नहीं है कि वह 9 घण्टे बाद कार्यालय छोड़ सकता है। कार्यालय या किसी अन्य कार्यस्थल को छोड़ने में सामान्य रूप से आधा घण्टा लगता है। कार्यालय में 9 घण्टे से अधिक काम करने के कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर खतरनाक प्रभाव पड़ेगा। यही कारण है कि सभी देशों में से किसी ने भी इसके लिये प्रयास नहीं किया है। कार्यान्वयन से पहले एक विशेषज्ञ पैनल द्वारा चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक प्रभाव की जाँच की जानी चाहिये।''

✶ **प्रश्न दो पी एफ :** भर्ती के समय कम्पनियाँ आधार तथा पैन नम्बर लेती हैं। लकिन पी एफ कागजों में बहुत मजदूरों का नाम/पिता का नाम/जन्म तिथि आधार/पैन से अलग भर देते हैं। इस कारण नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं निकलते। काफी चक्कर के बाद कम्पनियाँ सही जानकारी लिख कर देती हैं। फिर, भविष्य निधि कार्यालय के चक्कर लगाओ। पी एफ की डीटेल्स चैक क्यों नहीं करते ? और एक बात : नोटबन्दी के साथ रिश्वत बन्द हो जायेगी, जीवन बेहतर हो जायेगा की कहानी बन्द हो जानी चाहिये।

✶ **क्वश्चन तीन :** आई एम टी मानेसर में किरण उद्योग फैक्ट्रियों में मजदूर काम बन्द करते हैं तब 25-28 तारीख को तनखा। सात को साँय तक तनखा बैंक खातों में नहीं पहुँचने पर काम बन्द करने में कोई दिक्कत है क्या?

✶ **सवाल चार अधेड़ मजदूर का :** आई एम टी मानेसर की गारमेन्ट फैक्ट्रियों में जबरदस्ती रोकने वाली बात गड़बड़ है। अधिक आयु वाले वरकरों को रात 8 बजे तो छोड़ ही देना चाहिये ताकि कमरे पर जा कर भोजन बना सकें।

✶ **प्रश्न पाँच :** ''कासन, ग्रेटर नोएडा में बहुत ही बुरा हाल है। कोई यूनियन नहीं है। कोई इन्सपैक्टर नहीं। कोई लीव, बोनस, ग्रेच्युटी नहीं। इन्सपैक्टर आ कर सालाना वसूली कर जाते हैं। दस लोगों की ई एस आई तथा पी एफ 250 के लाइसेन्स वाली मैनपावर कम्पनी में। किसी को कभी भी हटा दो, कोई नहीं पूछता भाई।'' मिल कर क्यों नहीं पूछते ?

✶ **क्वश्चन छह दिल्ली वरकर :** ओखला औद्योगिक क्षेत्र की फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों में से दस प्रतिशत को ही दिल्ली में निर्धारित न्यूनतम वेतन। क्यों ?

✶ **सवाल सात :** एस के बेरी एण्ड ब्रदर्स (ए-119 तथा बी-262 ओखला फेज-2) फैक्ट्रियों में डेढ वर्ष से मजदूरों की पी एफ राशि कम्पनी भविष्य निधि कार्यालय में जमा नहीं कर रही। क्यों ?

✶ **प्रश्न आठ सफाईकर्मी का :** वॉयथ पेपर फैब्रिक्स (113/114ए, सैक्टर-24 फरीदाबाद) फैक्ट्री में जुलाई 2019 से महँगाई भत्ता तनखा में जोड़ दिया। परन्तु सफाई कर्मियों की तनखा में नहीं जोड़ा। क्यों ?

✶ **क्वश्चन नौ :** जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स फैक्ट्री की वरकर ने कहा कि लड़कियों में मेल नहीं है। यह बात काफी सुनने में आती है कि हम मजदूरों में मेल नहीं है। मेल क्यों नहीं है ?

✶ **सवाल दस फरीदाबाद में युवा मजदूर का :** साढे तीन साल से नाइट कर रहा हूँ। अभी ही देखो आँखों के नीचे काला हो गया है। बहुत नुकसान है। परन्तु मैंने ही नाइट करवा रखी है क्योंकि सुबह छह से साँय छह और साँय 6 से अगली सुबह 6 की ड्युटी है। घरवाली नहीं है इसलिये यह किया है। क्या मैं ठीक कर रहा हूँ ?

✶ **प्रश्न ग्यारह :** कोर डाइग्नोस्टिक्स (406 अद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) लैब में हाउसकीपिंग में ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 10 वरकरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। क्यों ?

वर्क भ्रमण

✶ इटावा से इन्टर करके सात-आठ साल पहले सूरत गया। सूट-दुपट्टों की रंगाई-छपाई फैक्ट्री में लगा। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। अच्छा नहीं लगा। पन्द्रह दिन में नौकरी छोड़ दी। भिवाड़ी में केबल फैक्ट्री में डेढ साल काम किया। नोएडा में मोल्डिंग में ज्यादा गर्मी के कारण फ्रिज के पुर्जे बनाने वाली फैक्ट्री की नौकरी छोड़ी। मई 2019 से आई एम टी मानेसर में काम।

✶ तीन वर्ष से जय उशिन (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) ऑटो पार्ट्स फैक्ट्री में काम कर रही थी। छुट्टी ले कर 15 दिन गाँव गई। लौटने पर ड्युटी पर नहीं लिया। अब दूसरी फैक्ट्री में लगी हूँ।

पढते हैं

✶**उद्योग विहार, गुड़गाँव में कोका कोला फैक्ट्री मजदूर :** ''पढ नहीं पाता। पत्नी रात को पढ कर सुनाती हैं और हम बातचीत करते हैं। वो गारमेन्ट फैक्ट्री में काम करती हैं।''

✶**ऑटो ड्राइवर :** '' झज्जर से मैकेनिकल में डिप्लोमा हूँ। धारूहेड़ा में जी के एन ड्राइवलाइन फैक्ट्री में लगा। मन्दी में 2011 में निकाल दिया। अब दोपहर में फुरसत रहती है तब आराम से दो घण्टे मजदूर समाचार पढता हूँ।''

✶**गार्ड :** ''बिजवासन में रहता हूँ। बच्चे वहाँ पढते हैं। ड्युटी का स्थान बदलता रहता है। इस समय बादशाहपुर में ड्युटी। दूरी 19 किलोमीटर। सवा घण्टा जाने में। साइकिल से जाना-आना। शिफ्टें 12-12 घण्टे की। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। वर्ष के 365 दिन ड्युटी। पढता ड्युटी के समय हूँ।''

भ्रमित एम डी

जे बी एम-1 (मारुति गुड़गाँव परिसर के अन्दर) फैक्ट्री में 500 वरकर तीन शिफ्टों में। ओवर टाइम ए तथा बी शिफ्टों में और पेमेन्ट सिंगल रेट से। यह कह कर 2013 में जे बी एम (122 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री ले गये कि रेगुलर कर देंगे। तीस होने पर होण्डा कार लाइन चलाने लगे। कम्पनी ने रहने का प्रबन्ध स्किल डेवलेपमेन्ट सेन्टर, फरीदाबाद इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन, बाटा चौक पर किया। छह महीने बाद नोएडा में परी चौक स्थित फैक्ट्री में होण्डा लाइन चलवाने लगे। कम्पनी सुबह 6 बजे ले जाती और रात 8-9 बजे फरीदाबाद लौटते। नोएडा फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनी का संचालक रोज ही गाली देता कि यहाँ क्यों आते हो, हमारे लोगों की नौकरी जाती है। मारपीट भी। नोएडा प्लान्ट हैड ने होण्डा लाइन उखाड़ कर अलवर में पथरेड़ी में जे बी एम फैक्ट्री (होण्डा कार प्लान्ट के पास) भेज दी। वहाँ हमें नये वरकरों को सिखाने को भी कहा। फिर 2014-अन्त में हम सब को निकाल दिया और नये मजदूरों से होण्डा लाइन चलवाने लगे। परमानेन्ट करने के जो पत्र हमें दिये थे वो रद्दी कागज साबित हुये। जे बी एम मैनेजरों के बीच चलती खींचातानों का अनुभव हमें तब हुआ जब जे बी एम-1 गुड़गाँव फैक्ट्री में यह कह कर वापस नहीं लिया कि तुम सब टूट कर गये क्यों थे। हम सब कुशल श्रमिक हैं और तब से इस-उस फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये ही काम कर रहे हैं।

इधर जे बी एम (जय भारत मारुति) कम्पनी कोसी (मथुरा) में बसें भी बनाने लगी है। और मैनेजिंग डायरेक्टर कहते हैं : ''जमीन तो हम ने नाप ली है, आसमान नापना बाकी है।''

बातचीत के लिये उपलब्ध

✶ उद्योग विहार गुड़गाँव में बुधवार, 29 जनवरी को दोपहर बाद, 4 बजे से 6 बजे के दौरान। ✶ आई एम टी मानेसर में वीरवार, 30 जनवरी को दोपहर बाद, 1 बजे से 5 बजे के दौरान। ✶ ओखला, दिल्ली में शुक्रवार, 31 जनवरी को सुबह साढे सात बजे से दस बजे के दौरान।

✶ फरीदाबाद में जनवरी में प्रत्येक रविवार को सुबह दस बजे से देर साँय तक। फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782
ईमेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

गोधूलि वेला

नया परिवेश, नया गाम–गुहाण्ड

✶✶✶ दुनिया-भर में मिल कर करने। उकसावों पर भड़कने से इनकार करने। सत्ता के आक्रमण के लिये टारगेट बनने से परहेज करने। दहशत के अल्पकालिक होते जाने। ''माँग'' धुँधली पड़ते जाने। सौदेबाजी और समझौतों के अर्थहीन होते जाने। विश्व-भर में टेम्परेरी वरकरों में तीव्र वृद्धि। फैक्ट्रियों में यहाँ अस्सी-नब्बे प्रतिशत मजदूर अस्थाई होने। रंग-बिरंगे बिचौलियों का स्थान सिकुड़ते जाने। संसार-भर में स्थानीय तथा वैश्विक आवागमन के तीव्र से तीव्रतर होने। सात अरब लोगों के बीच के साँझेपन का तेजी से सामने आने। सब अपने। अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु का अर्थहीन बनते जाना। यह सब हमें जीवन्त समय में ले आये हैं।

✶ विश्व-भर के ''सभ्य'' क्षेत्रों में दीर्घकाल तक रहे शासन के, सत्ता के मूल मन्त्र :

- सामान्य जन कोई परेशानी पैदा नहीं करते। कुछ शरारती तत्व होते हैं जो समस्यायें उत्पन्न करते हैं।
- सार्वजनिक तथा ऐसी सजा दो कि मिसाल बने। लोगों के दिलों पर दहशत राज करे।

लेकिन इन तीन सौक वर्षों के दौरान उल्लेखनीय क्षेत्रों में शासन को, सत्ता को इनके हानिकारक परिणाम अधिकाधिक महसूस होने लगे। सामान्य जन के असन्तोष को नरमी से बिखेरने और मिसाल वाली सजा की जगह ''सुधारने'' वाली धारणायें कई क्षेत्रों में प्रभावशाली बनी। प्रतिनिधि-प्रणाली के जरिये असन्तोष पर नियन्त्रण स्थापित कर असन्तोष को बिखेरना शासन में, सत्ता में प्रचलित हुआ।

इन चालीस-पचास वर्ष के दौरान विश्व-भर में सख्ती अथवा नरमी और मिसाल वाली सजा या ''सुधारने'' में अदला-बदली तीव्र हुई। इनके कारगर मिश्रण के लिये अनेक प्रयोग भी हुये। और, स्वघोषित कल्याणकारी सत्तायें कमजोर होती आई हैं।

ऐसे में इन पन्द्रह-बीस वर्ष में सख्ती, चन्द विघ्न सन्तोषी, और शक्तिशाली नेतृत्व शासन में, सत्ता में दुनिया-भर में तेजी से प्रभावशाली बन रहे हैं। पुलिस का सैन्यीकरण। पुलिस को सेना वाली मारक क्षमता। और सेना को पुलिस वाली ड्युटी।

✶✶✶ इन दस वर्ष के दौरान :

प्रतिनिधि नहीं। माँगें नहीं। प्रत्येक द्वारा प्रत्येक को भड़काना। हरेक का भागीदार होना। स्त्री-पुरुष वरकरों का फैक्ट्रियों के अन्दर बैठ जाना। बोलना नहीं, उठना नहीं, बाहर नहीं निकलना। एक पहलू नहीं। हजारों पहलू। बहुआयामी। बोलने के अनेकों तरीके। आनन्ददायक कोलाहल। सजा का बज गया है बाजा।

चन्द उदाहरण :

2011 में उद्योग विहार, गुड़गाँव में ईस्टर्न मेडिकिट कम्पनी की फैक्ट्रियों में टेम्परेरी वरकरों के खिलाफ कई बार मैनेजमेन्ट को पुलिस बुलानी पड़ी।

2011 में मारुति सुजुकी मानेसर कार प्लान्ट में जून और फिर अक्टूबर में मजदूरों का फैक्ट्री के अन्दर बैठ जाना। वार्ता के लिये बुलाये साथी वरकरों की गिरफ्तारी पर भी मजदूर नहीं भड़के। मारुति मैनेजमेन्ट और सरकार : '' मजदूर चाहते क्या हैं ?'' उल्लेखनीय रियायतें देना। और, 18 जुलाई 2012 को मजदूरी-प्रथा के दो प्रतीकों : फैक्ट्री बिल्डिंग तथा मैनेजरों पर वरकरों का आक्रमण। सरकार द्वारा इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर में 600 कमाण्डो स्थाई तौर पर तैनात।

पुलिस द्वारा 147 वरकर गिरफ्तार। जिला न्यायालय, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट द्वारा जमानत देने से इनकार। और फिर 13 मजदूरों को आजीवन कारावास की सजा।

मारुति फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे ढाई हजार वरकर आक्रमण के तत्काल बाद ओझल हो गये। कम्पनी प्रमुख के अगस्त 2012 के स्पीकिंग ऑडर : 546 परमानेन्ट मजदूर नौकरी से डिस्चार्ज। प्रत्येक वरकर के नाम भेजे पत्र में उस पर हिंसा के लिये अन्य को भड़काने और स्वयं हिंसा में भाग लेने के आरोप।

फरवरी 2013 में नोएडा में विद्रोह के अगले दिन दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र में हँसते स्त्री-पुरुष मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर आक्रमण। पूरा क्षेत्र बन्द। और पुलिस की तादाद बढने पर सब वरकर ओझल।

आई एम टी मानेसर में 600 कमाण्डो की तैनाती के बाद 2014 में नपीनो ऑटो, बैक्सटर फार्मा, जय उशिन, अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्रियों के अन्दर-बाहर स्त्री-पुरुष वरकर कई रोज बैठे। कब्जा करने की बजाय कब्जा हटाना। ऑक्युपाई की जगह डी-ऑक्युपाई करना। सब स्थानों को सब के लिये खोलना।

पलवल में 2014 में पृथला-बघोला ओद्योगिक क्षेत्र को मजदूरों के समूहों ने बन्द किया। ज्यादा पुलिस की तैनाती पर वरकर ओझल हो गये। और, फरीदाबाद में लखानी शूज की एक फैक्ट्री के मजदूरों पर नियन्त्रण के लिये कई थानों की पुलिस बुलानी पड़ी।

फरवरी 2015 में उद्योग विहार, गुड़गाँव में गारमेन्ट फैक्ट्रियों के स्त्री-पुरुष मजदूरों का विद्रोह। कई जिलों से पुलिस बुलानी पड़ी। जब पुलिस बल ढाई हजार हुआ तब सब वरकर ओझल हो गये।

2015 में केरल में मुन्नार चाय बागानों में काम करती महिला मजदूरों ने हर रंग के प्रतिनिधियों, सब लीडरों को भगा दिया।

दिसम्बर 2015 में तमिल नाडु में चैन्नई क्षेत्र में प्रिकॉल फैक्ट्री के आठ मजदूरों को दोहरे आजीवन कारावास की सजा। उसी क्षेत्र में जनवरी 2016 में लुकास टी वी एस फैक्ट्री के अन्दर 2400 युवा टेम्परेरी वरकर बैठ गये।

फरीदाबाद में 2015 में स्ट्ड्स हैल्मेट फैक्ट्री में स्ट्रैप विभाग के प्रत्येक वरकर पर दूसरों को भड़काने और स्वयं ड्युटी पर नहीं आने के आरोप लगाये गये।

करनाटक में बेंगलुरु में 18-19 अप्रैल 2016 को गारमेन्ट फैक्ट्रियों से एक लाख से ज्यादा महिला मजदूर निकली। सड़कों पर। बेंगलुरु शहर थम-सा गया। परेशान पुलिस अधिकारी के शब्द : ''इनके कोई लीडर नहीं हैं। इनकी कोई निश्चित माँग नहीं। क्या करें ?''

2016 में राजस्थान में अलवर जिले में होण्डा दुपहिया फैक्ट्री के चार सौ परमानेन्ट मजदूर और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे चार हजार वरकर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये। मजदूरों को फैक्ट्री से निकालने के लिये पुलिस को हमला करना पड़ा।

2016-17 में नोएडा में वीवो मोबाइल, मैजेस्टिक ऑटो, ओरियन्ट क्राफ्ट, प्रिया गोल्ड बिस्कुट, ओप्पो मोबाइल फैक्ट्रियों के मजदूरों और महागुण मोडर्न सोसाइटी में घरेलु महिला कामगारों ने विद्रोहों की लड़ी बनाई। अगस्त-सितम्बर 2017 में नोएडा में हौजरी कॉम्पलैक्स में पैरागॉन फैक्ट्री में स्त्री-पुलिस मजदूरों के खिलाफ मैनेजमेन्ट ने तीन बार पुलिस बुलाई।

इधर नवम्बर 2019 में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1500 मजदूर होण्डा मानेसर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये। उकसावों में नहीं आये। भड़के नहीं। पन्द्रह दिन फैक्ट्री के अन्दर बैठे रहे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।